# र्श भित्र १०१२ व्यक्ष्मिय सेवा श्रिय प्यत्र केन प्यत्र स्वन्य स्वन्य स्वन्य स्वन्य स्वन्य स्वन्य स्वन्य स्वन्य इत्र पर्येष स्वर्थ स्वत्र स्वन्य स्वन्य

# में हिंग्या नुसाहता

चश्चाःचरमाःखश्चाःचर्नाः स्थाःचर्नाः स्थाःचरः स्थाःचर

#### ग र्वोट्सी न्यूर्न यान्याम्य वस्यान्य यान्य यान्य वस्य विकार्

- १ रट.रेटे.स्ट्रेचर्म, श्रुव. मु.स्ययायहंयानु मीटाची सी. मायानु स्ट्रंन पानाट दर्वे यायाया
- य नेम प्रमुन ने न हीं न प्या में प्रमुन हो न प्रमुन स्था
- य कु सक्द हेदे हिरार केंर केंद्र केंद्र में मिना मारे दाद्र मा
- ८। म्रेन्यायबरार्यायक्तायतः भ्रम्यायर् राज्या होरार्म्यायया
- र्। ट.क्रॅंशटेश.नर.टे.चश्रश.मुॅं.चोर्ट्ट.टेर्ग्श.स.खेवा.वा.चे.कवाश.वर्वा.वाशा

### मि गिन्साम्बर्धन्द्र्यून्द्रा कुवार्यस्य क्रिंश्वत्युर्धे देशावन्य वायायायाय देश १५

- थ इसन्ते मुख्यान न्दान्य मानिका हिन्य निम्ना ने निमाय निमाय हिन्य ने निमाय निमाय निमाय निमाय निमाय निमाय निमाय
- < र्वेन् ग्री:व्र-पाश्यम् अप्यादे केंश्यम् कृत् केव्यं निवे निर्माणी ने निवानी देशपान्य हिला होशा
- ५। रूट्-शु-इसमालाइर्-शु-समाई-५मानगद्देव-कु-कु-त्र्याभूर-लिवाचेट-कु-लमाओ हुट-नर-नेमा

या यान्वस्यायवाक्षेत्रक्षयाः इत्याः विवास्यायः विवास्याः १०

वन्त्राहरा धूनानगमा रें-इंडेरग

वनद्गर्स्

গ্রব:৭র্ঝা

ट्रा यान्यस्यास्य स्ट्रियाः इस्स्य ग्रीः सूर्याः द्वीयासः द्वीसा

न्यो ना

वोःवा

মান্দ্ৰশা

वे ना

नवर:स्

ठ। गम्भस्यासयास्रेराक्षेत्राक्ष्मस्य ग्रीः द्वाक्राक्षेत्रः वर्षेत्रः वीस्र

ग्रेशः ह्रेशश

वहिग्राश हेता

ন্থ্ৰ নুষ্

প্রবাধ্য-শ্রীয

में सम्भिन्न

지원적 등지

क श्वीरामहरमेशन १०

ग मिलार्स् शिद्रभी रेशाशी प्रमाशाला नार्या त्या विदान प्रमार रेट रिश

या मु.स. ४०१२ मुप्त.मूर्या.महत्यासद्यास्य मित्राचार्य स्थान

य वेंद्र सेवे क्षेत्रावह नामायानगय क्षेत्र यम सुद्रमान सेंद्र व्येंद्र प्या

वि:क्ॅर्यान्ती:कॅर-कॅन्र्र-वडंद्रःग्रडंट्र-सःधेद्रःग्रेद्रःग्रयःग्रयःग्रयःग्रदःन्या

५। त्र्रेन् ग्रे मित्र प्रचेष स्प्रेय स्प्रेय स्प्रेय स्प्रेय स्प्रे स्प्रेय स्प्रेय स्प्रेय स्प्रेय स्प्रेय स्

हा ग्नियाग्रयान्द्रिं ग्निवानियादियात्र्यान्त्र्राम्ययान्त्र्राम्ययान्त्र्र्याय्यान्त्रेत्राच्या

द्वःश्चितःक्ष्यःद्यावःश्वेशा

यदःवा

र्ने न्रिः भ्रीन् धिया याया वया न्या रहे खुंवा

## श क्रें-अरे-क्र्यानयः श्रैं-क्रीश १०

That is the only way, the only realistic way. Number one, many Tibetans inside Tibet want independence, but according to the circumstance, the Dalai Lama supports the Middle Way Approach, which is the best, realistic way. I have met personally, quite a number of Tibetan intellectuals, some old, some young, and they all express to me they fully realise that our approach is the best approach.

Second, in order to find the solution to the Tibetan problem, Chinese support is very important. The solution must be found between Chinese and Tibetans. We have to find understanding or support from our Chinese brothers and sisters. Also at this moment, Tibetans have never had the experience of democracy. Tibet is a huge area and a majority of Tibetans are uneducated and never experienced democracy.

धैयायात्र्यास्ट्रियार्थरः श्रुव्यायक्तुःका